Research Paper Education

nf”Vckf/kr Nk=k dh loxkRed fLFkjrk ,oa ‘kf{kd miyfC/k dk lEcU/k dk v/;;u

Jherh vk|k ‘kfDr jk;

Jherh cfcrk lDlsuk

ABSTRACT

किसी बालक के व्यक्तित्व के विकास में षिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। यह विकास बालक का सर्वागींण विकास होता है। जिसके अन्तर्गत उसका षारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास सम्मिलित है, जिससे मानव को सर्वाधिक उपलब्धियां अर्जित हो सके तथा वो उच्चतम् लक्ष्यों को प्राप्त कर सके इससे मनुश्य का जीवन पूर्ण हो जाता है। व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले अनेक घटकों में संवेगात्मक स्थिरता प्रमुख है। संवेगात्मक स्थिरता आत्म नियंत्रण को प्रभावित करती तथा इससे किसी व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। अतः बालकों में अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिये उच्च स्तर की संवेगात्मक स्थिरता का होना आवष्यक है।

KEYWORDS

शिक्षा से आशय बालक के सर्वागीण विकास की अनवरत या आजीवन चलने वाली प्रक्रिया से है जिसके अन्तर्गत बालक का सर्वांगीण विकास सुनिष्चित करने के प्रयत्न किये जाते है। शिक्षा का उद्देष्य बालक को उसके व्यक्तित्व के विकास की उच्चतम सम्भावनाओं तक ले जाना है या "मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्तरूप से विद्मान है, उसे प्रत्यक्ष करना ही षिक्षा का कार्य है।" स्वामी विवेकानन्द षिक्षा के ये प्रयत्न जहॉ उसको, उसकी आयु –वर्ग को ध्यान में रखते हुये, भाषा एवं अन्य विषयों का ज्ञान कराते है, वहीं उसकों मानसिक रूप से इस योग्य भी बनाते है कि वह अपनी भावनाओं पर नियत्रण प्राप्त कर, उनकों परिष्कृत करते हुये उनपर स्थिरता प्राप्त कर, सही–गलत का उचित निर्णय करते हुये, अपने लक्ष्य–अपनी पूर्ण संभावना या अपने पूर्ण एवं संतुलित व्यक्तित्व को प्राप्त कर सके और स्वंय को, अपने परिवार, देष, समाज, के उपयोगी नागरिक के रूप में स्थापित कर सके।

संवेगात्मक स्थिरता से तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें प्रबल संवेगों का लक्ष्य प्राप्ति के लिये अनुकूलन है जहॉ मानसिक सन्तुलन के और शान्त मस्तिष्क के साथ एकाग्रता संभव हो सकती या पूर्ण अधिगम हो सकता है अथवा प्रस्तुत परिस्थितियों के प्रति सन्तुलित प्रतिक्रिया सुनिष्चित होती है, और उसकी यह प्रतिक्रिया सामाजिक अपेक्षाओं, नैतिक मान्यताओं तथा अध्यात्मिक विकास के पैमाने पर भी पूर्णतया खरी उतरती है।

संवेगात्मक स्थिरता की दृष्टि से दृष्टिवान और दृष्टिबाधित छात्रों में कोई भेद नही है कोई भी छात्र जब तक भावनात्मक रूप से स्थिरता नही प्राप्त कर लेता, वह शैक्षिक उपलब्धि नही प्राप्त कर सकता। इसलिये प्रत्येक बच्चे को भावनात्मक रूप से स्थिर होना आवष्यक है, जिससे वह अपनी सीखने/अधिगम की प्रक्रिया भली–भातिं पूर्ण कर सके। जो कि शैक्षिक उपलब्धि के लिये एक आवष्यक तत्व है।

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य बालक की किसी भी कक्षा में, षिक्षक के अध्यापन के पष्चात मूल्याकंन के द्वारा प्राप्त, छात्र के किसी विषेष विषय में या सभी विषयों में ज्ञान के स्तर से है जिसे, अंको या ग्रेड में व्यक्त किया जाता है।

अध्ययन की आवष्यकता–
संवेगात्मक स्थिरता को सर्वसम्मति से मानवीय जीवन की एक महत्वपूर्ण आवष्यकता के रूप में स्वीकार किया जाता है जहॉ तक संवेगात्मक स्थिरता को प्रभावित करने वाले कारकों का प्रष्न है तो दृष्टिबाधित बालक अपवाद नही है क्योंकि समान्य छात्रों की ही तरह दृष्टिबाधित छात्रों की भी भावनात्मक स्थिरता प्रभावित होती है। दृष्टिहीन एवं अल्पदृष्टि छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि सुनिष्चित करने हेतु उनकी भावनात्मक स्थिरता का अध्ययन कर उससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन करते है जिसका उददेष्य है –दृष्टिहीन छात्र जो राष्ट्र के भावी नागरिक है, को राष्ट्र की मुख्यधारा में सम्मिलित करने हेतु उनका सर्वांगीण विकास सुनिष्चित करना। इस हेतु हमें यह जानना परम् आवष्यक हो जाता है कि 1–दृष्टिबाधित छात्रों की भावनात्मक स्थिति कैसी होती है? 2–दृष्टिबाधित छात्रों की भावनात्मक स्थिति में कितनी स्थिरता है ?3–दृष्टिबाधित छात्रों की भावनात्मक स्थिरता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ क्या सम्बन्ध है?

अतः वर्तमान शोध में इस बात की पुष्टि करने का प्रयास किया गया है कि क्या किसी बच्चे कि शैक्षिक उपलब्धि उसकी संवेगात्मक स्थिरता से सीधा सम्बन्ध रखती हे? साम. न्य छात्रों पर तो इस बात की अनेक शोधों में पुष्टि हुई परन्तु विषेष आवष्यकता वाले दृष्टिहीन छात्रों पर इसकी और अधिक पुष्टि के लिये अभी शोध की आवष्यकता है। अतः वर्तमान शोध में यह जानने की आवष्यकता अनुभव की गई है कि क्या दृष्टिहीन छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सीधा सम्बन्ध है?

समस्यात्मक कथन– "दृष्टिबाधित छात्रों की सवेगांत्मक स्थिरता एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन"

संक्रियात्मक परिभाषायें–
दृष्टिबाधित छात्र– से तात्पर्य उन बालक बालिकाओं से है जो या तो बिल्कुल भी देख सकने असमर्थ है या जिन्हें न के बराबर दिखाई पडता है।

संवेगात्मक स्थिरता– से तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें प्रबल संवेगों का लक्ष्य प्राप्ति के लिये अनुकूलन है जहॉ मानसिक स्थिति सन्तुलित रहती है जिससे पूर्ण एकाग्रता सुनिष्चित होती है।

शैक्षिक उपलब्धि–से तात्पर्य बालक की किसी भी कक्षा में षिक्षक के अध्यापन के पष्चात मूल्याकंन के द्वारा प्राप्त ज्ञान के स्तर से है। जिसे अंको या ग्रेड में व्यक्त किया जाता है।

अध्ययन के उद्देष्य–
1–दृष्टिबाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।
2–दृष्टिबाधित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।
3–दृष्टिबाधित बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।
परिकल्पना–
1–दृष्टिबाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।
2– दृष्टिबाधित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।
3– दृष्टिबाधित बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।

शोध प्रविधि–
1–प्रयुक्त विधि – वर्तमान शोध में दृष्टिहीन छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है इसमें आंषिक एवं पूर्ण रूप से दृष्टिबाधित 30 बालकों एवं बालिकाओं को चुना गया है तथा वर्णनात्मक सर्वे प्रविधि का प्रयोग किया गया है।
2–जनसंख्या– इस शोध में यह माना गया है कि जिन दृष्टिहीन छात्रों एवं छात्राओं को इस अध्ययन में चुना गया है वे सभी दृष्टिहीन छात्र–छात्राओं की सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते है।
3–प्रतिदर्ष –वर्तमान अध्ययन कक्षा–6 में अध्ययनरत 30 छात्रों जिनमें बालक एवं बालि. कायें दोनों सम्मिलित है, की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक स्थिरता का अध्ययन किया गया है, इनमें कुछ बालक एवं बालिकायें पूर्ण रूप से दृष्टिहीन तथा कुछ बालक एवं बालिकायें आंषिक रूप से दृष्टिहीन है।

अध्ययन की सीमायें इस अध्ययन में समय के आभाव एव शोध की प्रकृति को देखते हुये केवल 30 दृष्टिहीन छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता का अध्ययन किया जा सका। इसलिये प्रतिदर्ष अत्यन्त कम है जिसकी वजह से यह सम्पूर्ण दृष्टिहीन छात्रों का सामान्यी करण नही कर सकता।

उपकरण प्रयोग–

वर्तमान अध्ययन के लिये निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. EMOTIONAL STABILITY TEST दृष्टिबाधित छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता के मापन के लिये डा0ए0सेन गुप्ता तथा डा0 ए0के0सिंह द्वारा निर्मित "EMOTIONAL STABILITY TEST FOR CHILDREN" का प्रयोग किया गया। इस परीक्षण में 15 प्रष्न है जिनको सर्वप्रथम ब्रेल लिपि में परिवर्तित कर अनुकूलित किया गया, जिनका उत्तर बालकों को "हॉ" या "नही" में देना है। परीक्षण प्रयोग निर्देष (ज्मेज उंदनंसद्ध के अनुसार किसी बच्चे का इस परीक्षण में अधिकतम ंबवतम 15 हो सकता है। इस परीक्षण के प्रष्न संख्या 09 या 10 में "नही" तथा अन्य सभी प्रष्नों के उत्तर में "हॉ" के लिये +1 अंक दिया जाता है तथा इसके विपरीत उत्तरों के लिये 0 अंक प्रदान किया जाता हैं।

इस परीक्षण में अधिक अंक अर्जित करने वाले छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता निम्न होती है तथा निम्न अंक पाने वाले छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता उच्च या अच्छी होती है। वर्तमान अध्ययन में, अध्ययन की सुविधा के लिये इस परीक्षण में छात्रों द्वारा प्राप्त अंको को अधोलिखित प्रकार से तीन अंक स्तरों में विभाजित किया गया है–

(अ) उच्च– जिन छात्रों ने 09 से 15 अंक अर्जित किये।

(ब) औसत– जिन छात्रों ने 06 से08 अंक अर्जित किये।

(स) निम्न– जिन छात्रों ने 01 से 05 अंक अर्जित किये।

TOOL NO-02 कक्षा–05 का RESULT CARD: बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के लिये उनके कक्षा–05 की वार्षिक परीक्षा में प्राप्त अंको को आधार बनाया गया है क्योकिं यह सभी छात्र कक्षा–6 में अध्ययनरत है वार्षिक परीक्षा में प्राप्त अंकों को 3 श्रेणियों में विभाजित किया गया –

01– उच्च या प्रथम श्रेणी– जिन छात्रों ने 60 प्रतिषत या इससे अधिक अंक प्राप्त किये थे उनको इस श्रेणी में रखा गया ।

02– औसत या द्वितीय श्रेणी– 45 से 59 प्रतिषत अंक प्राप्त किये थे उनकों इस श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया ।

03– निम्न श्रेणी या तृतीय श्रेणी– 33 से 44 प्रतिषत अंक अर्जित करने वाले छात्र–छात्राओं को इस श्रेणी के अर्न्तगत रखा गया।

5– ऑकड़ों का एकत्रीकरण–

वर्तमान लघुषोध के लिये कुल 30 दृष्टिहीन छात्र–छात्राओं सें सम्बन्धित ऑकडों के एकत्रीकरण हेतु शोधार्थिनी ने जनपद लखनऊ के दृष्टिहीन छात्र–छात्राओं के विघ. ालयों को चयनित किया । शोधार्थिनी ने छात्र–छात्राओं पर उपकरण न0–01 प्रयोग छात्र–छात्राओं पर किया या उपकरण प्रष्नों पर प्रतिकिया प्राप्त की। इसके साथ ही शोधार्थिनी ने विद्यालय प्रभारियों से उन सभी छात्र–छात्राओं के विगत वर्ष/सत्र की कक्षा–05 के वार्षिक परीक्षा के परीक्षा–परिणाम एवं अंको का विवरण भी प्राप्त किया।

विष्लेषण एवं व्याख्या–

संवेगात्मक स्थिरता परीक्षण में प्राप्त अंकों के आधार पर बनाई गई 03 श्रेणियों एवं वार्षिक परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर बनाई गई तीन श्रेणियों के अन्तर्गत बालकों एवं बालिकाओं का अलग –02 तथा तत्पष्चात दोनों का संयुक्त रूप से विष्लेषण किया गया तथा दोनों में सम्बन्ध का अध्ययन किया गया।

परिणाम एवं व्याख्यायें–

दृष्टिहीन छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध जानने के लिये इस शोध में कुल 30 छात्रों का परीक्षण किया गया जिनमें कुल 20 बालक एवं 10 बालिकायें थी। नीचे दी गई तालिका–01 में इन छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता का स्तर दर्षाया गया है–

तालिका–01

कमांक	**प्राप्तांक वर्ग**	**बालक**	**बालिका**	**योग**	**संवेगात्मक स्थिरता का स्तर**
1.	उच्च (9-15)	03	01	04	निम्न
2.	औसत (6 - 8)	15	08	23	औसत
3.	निम्न (1- 5)	02	01	03	उच्च
	योग	**20**	**10**	**30**	–

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि कुल 30 छात्रों में से 03 बालकों एवं 01 बालिका की संवेगात्मक स्थिरता का स्तर निम्न पाया गया है, 15 बालकों एव ं08 बालिकाओं की संवेग. ात्मक स्थिरता का स्तर औसत पाया गया तथा 02 बालकों एवं 01 बालिका की संवेगात्मक स्थिरता का स्तर उच्च पाया गया। अर्थात इन छात्रों में संवेगात्मक स्थिरता अत्यन्त अच्छी है और इन 03 छात्रों का संवेगात्मक समायोजन अत्यन्त अच्छा है। 23 छात्रों का संवेगात्मक स्थिरता, औसत तथा कुल चार छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता अत्यन्त कम है। उपरोक्त 30 दृष्टिबाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि भी देखी गई तालिका 02 में इनकी शैक्षिक उपलब्धि के ऑकडे दर्षाये गये है–

तालिका–02

कमांक	**प्राप्तांक वर्ग**	**बालक**	**बालिका**	**योग**
1.	उच्च (60-100)	11	04	15
2.	औसत (45-59)	04	05	09
3.	निम्न (33-44)	05	01	06
	योग	20	10	30

इन 30 छात्रों में कुल 15 छात्र जिनमें 11 बालक एवं 04 बालिकायें है जो उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले पाये गये अर्थात इन्होंने कक्षा–5 की अन्तिम परीक्षा में 60 से अधिक अंक प्राप्त किये थे। 04 बालकों एवं 05 बालिकाओं, कुल 09 छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि औसत पायी गयी अर्थात इन्होंने 45–59 प्रतिषत अंक प्राप्त किये तथा 05 बालकों एवं 01 बालिका की शैक्षणिक उपलब्धि निम्न थी क्योकि इन्होंने 33 से 44 प्रतिषत अंक प्राप्त किये थे।

उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों की संवेगात्मक स्थिरता के परिणाम नीचे दी गयी तालिका–03 में दर्षाये गये है–

तालिका–03

उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों की संवेगात्मक स्थिरता के स्तर का विष्लेषण

कुल संख्या –11

कमांक	संवेगात्मक स्थिरता का स्तर	बालकों की संख्या
1	उच्च	01
2	औसत	08
3	निम्न	02

कुल 11 बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च था परन्तु इन सबकी संवेगात्मक स्थिरता एक जैसी नही थी। उक्त तालिका से स्पष्ट है कि इनमें से एक बालक की संवेगात्मक स्थिरता का स्तर उच्च अर्थात उत्तम पाया गया। जबकि 08 बालकों की संवेगात्मक स्थिरता का स्तर औसत पाया गया, परन्तु 02 बालकों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि होते हुये भी इनकी संवेगात्मक स्थिरता निम्न थी, यह बालक आषा के विपरीत अपवाद है, क्योकि बालकों की संवेगात्मक स्थिरता का स्तर औसत से नीचे नही जायेगा। औसत शैक्षिक उपलब्धि वाले दृष्टिबाधित बालकों की संख्या 04 थी जिनकी संवेगात्मक स्थिरता नीचे दी गई तालिका–04 में दर्षायी गई है–

तालिका–04

औसत शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों की संवेगात्मक स्थिरता के स्तर का विष्लेषण

बालकों की संख्या–04

कमांक	संवेगात्मक स्थिरता का स्तर	बालकों की संख्या
01	उच्च	01
02	औसत	03
03	निम्न	00

निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले दृष्टिबाधित बालकों की संवेगात्मक स्थिरता के परिणाम नीचे दी गई तालिका–05 में दर्षायी गयी है–

तालिका–05

निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों की संवेगात्मक स्थिरता के स्तर का विष्लेषण

बालकों की संख्या–05

कमांक	संवेगात्मक स्थिरता का स्तर	बालकों की संख्या
01	उच्च	00
02	औसत	04
03	निम्न	01

प्रतिदर्ष में निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों की कुल संख्या–05 थी जिनमें 04 बालकों की संवेगात्मक स्थिरता का स्तर औसत पाया गया तथा एक बालक की संवेगात्मक स्थिरता का स्तर निम्न पाया गया। यह परिणाम भी यह दर्षातें है कि जहॉ तक बालकों का प्रष्न है तो उनकी संवेगात्मक स्थिरता का ;कुछ अपवादों को छोडकर शैक्षिक उपलब्धि से सीधा सम्बन्ध है।

उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाली बालिकाओं की संवेगात्मक स्थिरता का स्तर तालिका–06 में दर्षाया गया है–

तालिका–06

उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाली बालिकाओं की संवेगात्मक स्थिरता के स्तर का विष्लेषण

बालिकाओं की संख्या–04

कमांक	संवेगात्मक स्थिरता का स्तर	बलिकाओं की संख्या
01	उच्च	00
02	औसत	04
03	निम्न	00

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाली कुल 04 बालिकाओं में से 04 की संवेगात्मक स्थिरता औसत स्तर की पायी ।
औसत शैक्षिक उपलब्धि वाली 05 दृष्टिबाधित बालिकाओं की संवेगात्मक स्थिरता परिणाम नीचे दी गई तालिका–07 दर्षाये गये है–

तालिका–07
औसत शैक्षिक उपलब्धि वाली बालिकाओं की संवेगात्मक स्थिरता के स्तर का विष्लेषण
बालिकाओं की संख्या–05

क्रमांक	संवेगात्मक स्थिरता स्तर	बलिकाओं की संख्याा
01	उच्च	01
02	औसत	03
03	उच्च	01

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि 05 औसत शैक्षिक उपलब्धि वाली बालिकाओं में एक बालिका की संवेगात्मक स्थिरता उच्च स्तर की ,तीन बालिकाओं की औसत स्तर की तथा एक बालिका की संवेगात्मक निम्न स्तर की पायी गयी।
निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली दृष्टिबाधित बालिकाओं की संवेगात्मक स्थिरता तालिका–08 में दर्षायी गयी है–

तालिका–08
निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली बालिकाओं की संवेगात्मक स्थिरता के स्तर का विष्लेषण
बालिकाओं की संख्या–01

क्रमांक	संवेगात्मक स्थिरता स्तर	बलिकाओं की संख्या
01	उच्च	00
02	औसत	01
03	निम्न	00

उक्त तालिका–08 से स्पष्ट है कि कुल एक निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली बालिका की संवेगात्मक स्थिरता का स्तर– औसत पाया गया इस बालिका की शैक्षिक उपलब्धि औसत उपलब्धि के आस–पास रही थी।
दृष्टिबाधित छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह सम्बन्ध गुणांक
दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य ध नात्मक सह सम्बन्ध पाया गया जो 0ण्1225 तथा 0ण्1 स्तर पर सार्थक है अर्थात जिन दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं में संवेगात्मक स्थिरता होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है इस आधार पर : कम संख्या 1 पर की गई नल परिकल्पना को अस्वीकृत हो गई । जैसा कि अधोलिखित तालिका न0–09 में वर्णित है–
दृष्टिबाधित विद्यार्थियों (कुल 30 छात्र एवं छात्राओं) के संवेगात्मक स्थिरता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह सम्बन्ध गुणांक

तालिका न0–09

शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों का कुल योग	संवेगात्मक स्थिरता के प्राप्ताकों का कुल योग	सहसम्बन्ध गुणाकं
1906.05	1426.67	0.1225

दृष्टिबाधित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया जो 0ण्1567 तथा 0ण्1 स्तर पर सार्थक है अर्थात जिन बालकों में संवेगात्मक स्थिरता होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है इस आधार पर : कम संख्या 2 पर की गई नल परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। जैसा कि अध ोलिखित तालिका न0–10
दृष्टिबाधित बालकों के संवेगात्मक स्थिरता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह सम्बन्ध गुणांक

तालिका न0–10

शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों का कुल योग	संवेगात्मक स्थिरता के प्राप्ताकों का कुल योग	सहसम्बन्ध गुणाकं
1302.19	960.00	0.1567

दृष्टिबाधित बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया जो 0ण् 0228 तथा 0ण्1 स्तर पर सार्थक है अर्थात जिन बालिकाओं में संवेगात्मक स्थिरता होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है इस आधार पर : कम संख्या 3 पर की गयी नल परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है। जैसा कि अध ोलिखित तालिका न0 11 में वर्णित है–
दृष्टिबाधित बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह सम्बन्ध गुणांक

तालिका न0–11

शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों का कुल योग	संवेगात्मक स्थिरता के प्राप्ताकों का कुल योग	सहसम्बन्ध गुणाकं
603.86	466.67	0.0228

उपसंहार
किसी बालक के व्यक्तित्व के विकास में षिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। यह विकास बालक का सर्वागींण विकास होता है। जिसके अन्तर्गत उसका शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास सम्मिलित है, जिससे मानव को सर्वाधिक उपलब्धियां अर्जित हो सके तथा वो उच्चतम् लक्ष्यों को प्राप्त कर सके इससे मनुष्य का जीवन पूर्ण हो जाता है।

जब हम औपचारिक षिक्षा की बात करते हैं तो हम छात्रों के ज्ञान को उनकी शैक्षिक उपलब्धि के रूप में मानते हैं शैक्षिक उपलब्धियों के आधार पर ही छात्रों को अगली कक्षा में प्रोन्नत किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य – किसी विषय या सभी विषयों में बालकों (छात्रों) की उपलब्धियों से है बालकों की उपलब्धियों का परीक्षण कर अध्यापकों द्वारा इन्हें अंको या ग्रेडस में प्रदर्षित किया जाता है। बालकों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक उनकी बुद्धिलब्धि से प्रभावित होती है, परन्तु बुद्धिलब्धि के अतिरिक्त शैक्षिक उपलब्धि उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा उनके व्यक्तित्व से भी प्रभावित होती है। व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले अनेक घटकों में संवेगात्मक स्थिरता प्रमुख है। संवेग. ात्मक स्थिरता आत्म नियंत्रण को प्रभावित करती तथा इससे किसी व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। अतः बालकों में अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिये उच्च स्तर की संवेगात्मक स्थिरता का होना आवष्यक है।

वर्तमान अध्ययन में दृष्टिहीन बालकों एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनकी मानसिक स्थिरता के बीच सम्बन्ध जानने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन में इस बात की पुष्टि हुयी है कि बिना किसी लिंग के भेदभाव के सामान्य बालकों एवं बालिकाओं के समान दृष्टिहीन बालकों एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धियों एवं उनकी संवेगात्मक स्थिरता में सीधा सम्बन्ध है अर्थात उच्च शैक्षिक उपलब्धियों वाले बालक – बालिकाओं की संवेगात्मक स्थिरता भी उच्च या उत्तम होती है।

इसी प्रकार औसत शैक्षिक उपलब्धियों वाले बालक बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता भी औसत स्तर की पायी गयी तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धियों वाले बालक बालिकाओं की संवेगात्मक स्थिरता भी निम्न स्तर की पायी गयी।
––––––––––000000––